कहना था कि हमारे दैनिक आहार में मोटे अनाज यानी बाजरा का बहुत अधिक महत्व है। वह शरीर को कई तरह की बीमारियों से लड़ने की शज़्ति देता है। नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल माननीय पी.बी.आचार्य ने कहा कि भारत को कृषि प्रधान देश कहने के पीछे अवधारणा यही थी कि भारतीय खेत पालक माने जाते थे। उनसे उत्पादित अनाज से पूरा देश परिवार की तरह पलता था। मप्र सरकार में महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमतीअर्चना चिटणीस ने बताया कि उनके राज्य के 313 गांव कुपोषण की चपेट में थे, उन्हें उससे बाहर निकालने के लिए पौष्टिक भोजन पर खास जोर दिया गया है। इसके लिए गांवों में कई तरह के कार्यक्रम शुरू किए गए हैं और उसके सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं। पर्यावरणविद डॉ. वंदना शिवा का मत था कि जलवायु अनुरूप खेती को बढ़ावा देकर किसानों की समस्या हल की जा सकती है। इससे किसानों द्वारा अपने यहां की अनुकूलता के हिसाब से उत्पादन किया जाएगा जिससे उनकी और लोगों की पौष्टिक खाद्य सामग्री की समस्या हल की जा सकती है। उनका मानना था कि देश में कृषि उत्पादन में रसायनिक खाद्य का प्रयोग बहुत तेजी से बढ़ा है। इससे बहुत सारे किसान पिछड़ गए हैं। परज़्परागत खेती का चलन समाज के लिए हितकर साबित होगा।

दो दिन की संगोष्ठी में छह तकनीकी सत्र हुए। इन सत्रों में भारत के उज़्र, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम में पोषण का दर्जा पर बात की गई। आयुर्वेद, आधुनिक चिकित्सा और पोषण दृष्टिकोण से भारत में वर्तमान पोषण संबंधी स्थिति को समझा गया। पोषण सुरक्षा को लेकर लोगों के बीच जाने की बात की गई। खेती केवल पेट को भरने के लिए नहीं है, यह मन, शरीर और आत्मा की पोषण है। भोजन को सभी रूप में पोषण प्रदान करना चाहिए। हर भारतीय के लिए पौष्टिक थाली बनाना और उसे सुनिश्चित करना संगोष्ठी का विषय था। इसमें कृषि, परिवार कल्याण, स्वास्थ्य मंत्रालय,